

1053

H)

83

P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1544
1971

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

1053

(Garibonki ah)

Ruo. 900 N 12. 10. 38, in Hindi. Govt. of
N. P.

गरीबों की 'आह'



लेखक:— ऐम० ऐल० बो० बरेली

प्रकाशक:—गंगाराम सिंह

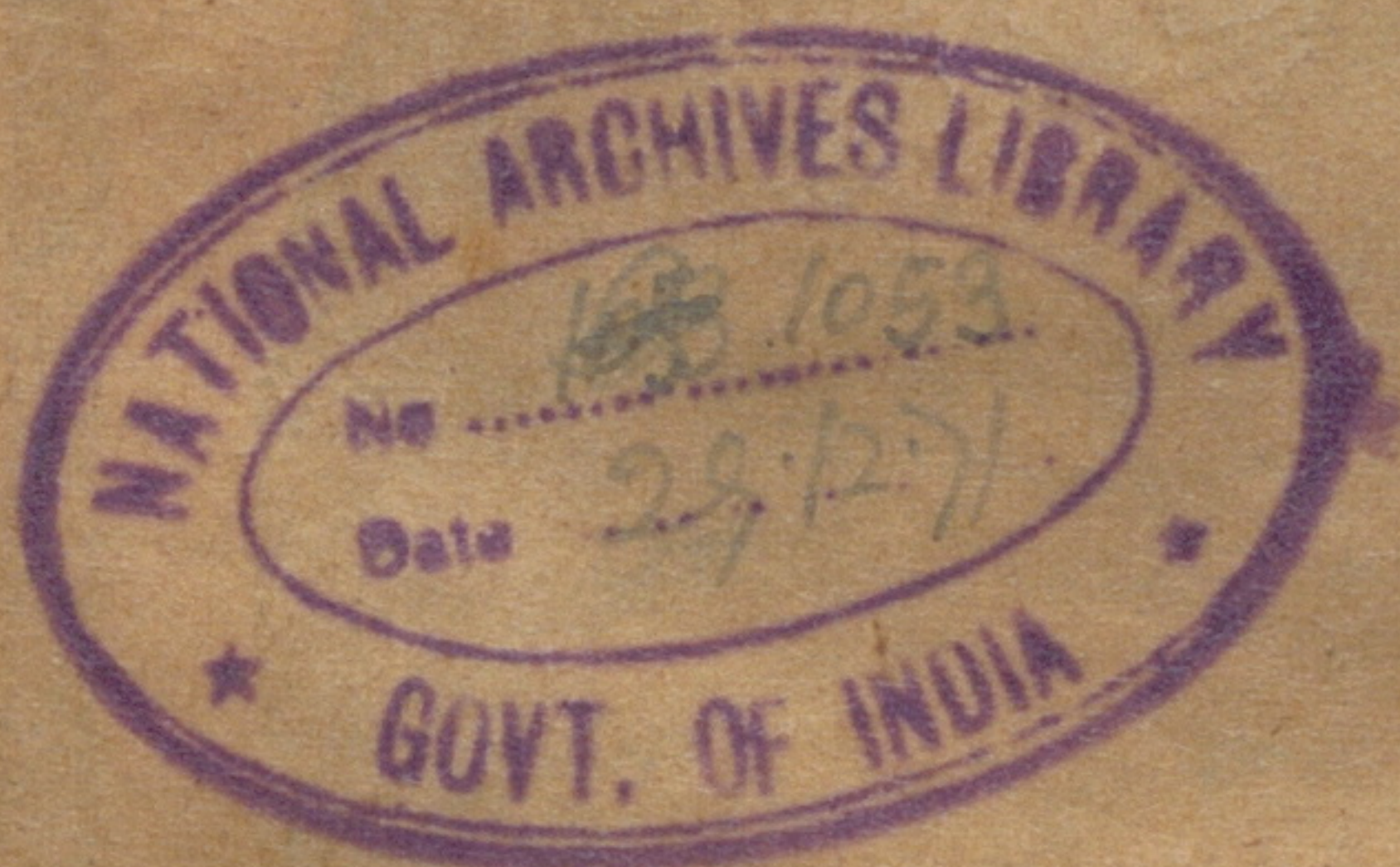
प्रथम बार
२०००

सर्वाधिकार
ले. के. आ. हे.

{ मूल्य-॥

891-431

ML 7167



• वादे मातरम् •

23 OCT 1935

॥ गरीबों की आह ॥

प्रणाम है उस देश को जो अन्न देता है हमें ।
जब अन्न हम सेवन करें बल बुद्धि भी देता हमें ॥
फिर देश को प्रणाम है जिस में सदा हम खेलते ।
जिसकी मनोहर भूमि में हम रात दिन हैं झूमते ॥
जिसके अनेको दृश्य मनको मोहते हैं रात दिन ।
लखि २ जिनहें सुख शांति से जीवन बिताते रातदिन

२

है कुछ गरीबों से विनय सुनलें उसे वे ध्यान दें ।
मजदूर वा कृषक सभी मम ओर वे कुछ ध्यान दें ॥
जो मास मदिरा पान करते आज से वे त्याग दें ।
तब जगत पति जगदीश उनके कष्ट को संघार दें ।
मम भ्रात प्यारे (श्रम) जीवी आज से यह व्रत करें ॥
शुभ आचरण शुभ कर्म प्रथम चित्त में अपने धरें ।

३

फिर सत्यता का गह दुधारा वीर मम रण में चलो
अनन्याई चाहें बाप हो बस उसको भी तुम त्याग दो ।
हैं आप में वह शक्ति जो पैसे में हो सकती नहीं ॥
जिसके अखण्ड प्रताप से कोई शक्ति लड़ सकती नहीं
वह है परिश्रम शक्ति जिसको भूलकर न छोड़ना ।
इस शक्ति के आगे कभी तुमको न हो मुंह मोड़ना ।

तवारीख हिन्द ।

॥ हार किं रंगिनी ॥

पढ़ कर के देखो आज तवारीख हिन्द की ।
 क्या सिखलाती हैं हमको तवारीख हिन्द की ॥
 पीरों से नहीं खाली तवारीख हिन्दी की ।
 पाँच गम से नहीं खाली तवारीख हिन्द की ॥
 श्री राम कृष्ण जैसे हैं योगी हुये यहां ।
 लक्ष्मण भरत बलदेव से बिरादर हुये यहां ॥
 ब्रह्मचारी हुये भीष्म से व्रत धारी भी यहां ।
 बलवान हुये भीम व अर्जुन से हैं यहां ॥
 बड़ों में वीर लवकुश थे या भरत सा निडर ।
 द्वापर में पिसर अर्जुन ने व्यहू को किया था सर ॥
 भक्तों में हुये ध्रुव व प्रह्लाद से निडर ।
 सत्यवादी हुये मोरध्वज हरिश्चन्द से वशर ॥
 हैं नारियों में सीता, सती सावित्री हुई ।
 अतसुहया, दमयन्ती सी धर्मवती हुई ॥
 हैं वीर रमणियों में रमनियां बहुत हुई ।
 दुर्गा अहिल्या चान्दबीबी वीरमती हुई ॥
 मैनावती वा महाराणी भांसी की थी निडर ।
 माता न खौफ दुशमनों का बोला था गदर ॥
 निर्भीक होके खूब ही उसने किया समर ।
 भारत की वीर बालाने दिखलाया था हशर ॥

(३५)

१

प्रतापी हुये शिवा व प्रताप से कभी
अपने वतन के दर्द से बेगार थे कभी
माना ज लौफ दुश्मनों का शेरों ने कभी
जां तक सवाई आखिर में इन शेरों ने कभी ॥

७

बन्दा बैरागी वीर की कहता ह कहानी
है हिन्दू कौम के लिये अनमोल कहानी
कौमों वतन का शेर था और वीर लासामी
खिदमत में वतन व कौम की जां उसने न जानी ॥

८

थे चार बच्चे सिंह के, दो जंग में गये
इज्जत वतन की रखने का कुरबान होगये
माता की गोद में दो बच्चे लाल रह गये
वह भी ग़ज़ब की मार से न बाकी रह सके ॥

९

गोविन्द सिंह की आंखों के तारे थे बाकी दो
दिल व जिगर के टुकड़े भी बाकी रहे थे दो ॥
माता के दिल को घीर बंधाते थे यही दो
पर, कौम के गद्दार ने बाकी न रखे दो ॥

१०

पकड़े बिचारे जब गये गोविन्द सिंह के लाल
उनका भी जीना होगया ऐ दोस्तों मुहाल ॥
आ आके काजी मुल्लाओं ने दी उन्हें युं चाल
इस्लाम के कबूल कर होजावों मालीमाली ॥

११

उत्तर में कहा दोनों ने है हम सिइ के जाये ।
 कुर्बान अपनी कौम पर होने को हैं आये ॥
 तुम जालिमों की चालों में हरगिज़ न हम आये ।
 और प्यारे हिन्दुस्तान पर कुर्बान हो जायें ॥

१२

जालिम ! कहा जब शेरों ने काजी गया है जल ।
 वहां पर न रुका मिन्ट भर एक दम दिया है चल ॥
 पहुँचा जब जो दरबार में करने लगा थुंगुल ।
 भाज आते नहीं काफ़र हैं लो उनके बस निगल ॥

१३

बस क्या था मौत उन की का सामान होगया ।
 जिन्दा चुनो दीवार में ऐलान हो गया ॥
 जल्लादो ! कसो इन को, बस इशार्द हो गया ।
 इस्लाम के क़ानून का फ़रमान हो गया ॥

१४

कसने को उन दो शेरों को जल्लाद चल दिये ।
 करने चुनाई ईंट की मेमार चल दिये ॥
 काजी व मुल्ले ठाट से एक साथ चल दिये ।
 शेरों पे जुल्म करने को दीवान चल दिये ॥

१५

दो ओर कर चुनाई जगह बीच में छोड़ी ॥
 अनमोल दोनों लालों की कर दी खड़ी जोड़ी ।
 छाती तलक चुनाई हुई बाकी थी थोड़ी ।
 काजी फिर आके कहता थूँ जो हो गया बोड़ी ॥

१६

कर लो कबूत दीन को छोड़ो धर्म को तुम ॥
 इस्लाम की तारीख में कहलाओ शाह तुम ।
 आखिर में आओ जन्नत को हुरों के साथ तुम ॥
 फिर इस अहाने दोज़ख में आओ कभी न तुम ॥

१७

कहने लगे वो शेर करो माफ़ये शाहो ।
 हम को तो अपने धर्म की करनी है गदाई ॥
 तेरी इस्लामी दौज़ख समझ ये नहीं आई ।
 बत जो कुछ तुझे करनी हो वो करले खुदाई ॥

१८

बस चुन गये दीवार में दो लाल बे बहा ।
 कुर्बान हुये धर्म पर वह लाल बे बहा ॥
 वो शहर जो गुलज़ार था अब खाक होरहा ।
 न काजो वो, न मुल्हा वह न शाह वह रहा ॥

१९

कहते नहीं कुछ बनती है सिंहों की कहानी ।
 रग रग में जो रा फैलाती है सिंहों की कहानी ॥
 मातम व ग़म से खाली न सिंहों की कहानी ।
 अब ज़्यादा नहीं कहता हूँ सिंहों की कहानी ॥

२०

है अज़ हर एक छोटे बड़े साहबान से ।
 ग़लती करेंगे माफ़ जो हो खाकसार से ॥
 जो कुछ हुई अशुद्धता हो खाकसार से ।
 सज़न क्षमा करें स्वयं पढ़ले सग़भाल के ॥

२१

सच्चे बनो सिपाही अपनी कोम व वतन के ।
 हमदर्द बनो आज से फिर कोम वतन के ॥
 दुनियां में नाम ऊंचा करो कोम वतन का ।
 भंडा कभी न नीचा हो वे कोम वतन का ॥

२२

हैं आज कल गरीब वतन दीन हो रहा ।
 सहस्र सह काजोरो जुलूम हैं वे दीन हो रही ॥
 खाने को नहीं मिलता है कपड़ों को तरसते ।
 फाँके किसी की हालत में जन्मत को खसकते ॥

सोचो जरा ! अमीरो ! और शहर के लोगों ।
 लेलो खबर गरीबों की जा गाँव को देखो ॥
 मजदूरों और किसानों की हालत खराब है ।
 होता नहीं स्व राज यही खास राज है ॥

२४

ऋषियों में हुये मनु व व्यास से कभी ।
 जिनकी लिखी हुई पोथियाँ पुजती रहीं अभी ॥
 भारत था आलमभर में तरक्की पे युं कभी ।
 कसली तनजुली पे कमर है मगर अभी ॥

गज़ल

क्या था हिन्दुस्तान पहले आज क्या है देखलो ।
 दूसरों को पीछे देखो पहले खुद को देखलो ॥
 थे कभी आराम व कृष्ण से जिसके अजीज ।
 आज के आहूक हैं उसकी इसके बेटे देखलो ॥

एक दिन शेरों से कुस्ती लड़ते जिस के लाल थे ।

आज डरते गीदड़ों तक वही हैं देखलो ॥

तीर व तलवार बछीं भाले कुब्बते जिस्मपर करते थे नाज ।

आज चाकू जेब में रखने से डरते देखलो ॥

पांडव कौरव लड़ा करते थे आपुस में हर रोज ।

रात को फिर एक होजाते थे गीता देखलो ॥

जो हमेशा इह्यन्य व्रत करते थे अखण्ड ।

पेश में वह मुब्तला रहते शबो दिन देखलो ॥

जो जमाने भर को देते थे कभी तालीम भी ।

गुरों से वह सीखते हैं आज खुद ही देखलो ॥

नृपती देखा करे थे प्रजा न दुःख पावे कहीं ।

चूसते हैं खूं गरीबों का वही अब देखलो ॥

हं विकालत जन की करती हिस्टरी आलम तमाम ।

उनको ही अब कोसता है एक जमाना देखलो ॥

बकरे, गिग्चे, मुर्गी, मेंढक, खरगोश की किस में शुमार ।

अब कसी जाता हैं गाँव भी बिचारी देखलो ॥

इस जमीने हिन्दने वो वो वशर पैदा किये ।

जिनकी शोहरत आज तक है आगे रहेगी देखलो ॥

था कभी आजाद ये हरफन में भी मौला कहो ।

आज जिन्दाने गुलामी में पड़ा है देखलो ॥

खाना जो दुनियां को देता होके खादिम कौम का ।

वह कितां भूखा व नंगा आज रहता देखलो ॥

शम्बली गुल, लालो गौहर से भरा जो हिन्द था ।

खाक ही चारों तरफ उड़ती है अब तुम देखलो ॥

अब भी सोचो और समझो कहता है यूँ एम. बी. ।

नाम तक मिट जायेगा रफ्तार आलम देखलो ॥

गजल

दयानन्द की महानता को महानों ही ने है जान पाया ।
 तभी तो गांधी ने हरिजनों के हक्कू को है सबक सुनाया ॥
 ऐ कौम हिन्दू न द्वेष कर तू गरीबों से वदनशीलों से तू ।
 मिलालें बिछड़ों को तू गले से के हक्कू का पैगाम है ये अया ॥
 जो सच्चे आशिक रहे तुम्हारे उन्हें हो नीचा क्यों तुम दिखाते
 भ्रूत पन दो मिटा दिलों से दिमाग में जो है भूत छाया ॥
 महात्मा गांधी का मानों कहना नहीं तो रोमोंगे एक दिन तुम ।
 न कौम के गर बने हितेषी समझ लो भाखिर है काल आया ॥
 बहुत बड़ी चीज एक्यता है व एकता से है सच्चता भी ।
 के दोनों से ही स्वतंत्रता है ऋषी दयानन्द ने बताया ॥
 है 'घमंड' नाहक घमंड इनका के उच्चता का है मान जिनको ।
 घमंड जिसने किया जहां में न नाम उसका रहा बकाया ॥

—०—

जगल

म० जी की मधुर वह वाणी हमारे दिल में समा रही है ।
 भ्रूतपन को मिटा दो जल्दी महान शक्ती यूँ कह रही है ॥
 जो दर्द दुःख व मुशीबतों में हमारे साथी रहे हैं हर दम ।
 भगा दो उन की दरिद्रता को जो रात दिन उन का खा रही है ।
 है अपने ऐसे वो दीन प्यारे न हाल अपना सम्भाल पाते ।
 दरों पर जिन के बहे हैं नाले जहां गन्दगी समा रही है ॥
 न धोवो धोते हैं उनके कपड़े न नाई उनकी करें हजामत ।
 और सर पे उनके लगे ये तुहमद के नीचता तुममें छारही है ॥
 समान समझो हर एक जनको किसी को नीचा कमीन मानो ।
 घमंड हरगिज करो न दिल में तुम्हें यूँ गीता बता रही है ॥

स्वराज का नाम पीछे लेना स्वतंत्रता पहले दे दो उनको ।
 नहीं तो प्यारी वतन की किशती भमर के चक्र में जा रही है ॥
 मिला लो उनको गले लगा लो दिलों में समता को भी बिठा लो ।
 कि उच्छ्वापन को धो बहाओ ज़िगर में जो धू समा रही है ॥
 न हिन्दू अपने को हों कहाते कहीं न 'बन्दा' ने देखा अब तक ।
 फिर पाप लेती क्यों कौम हिन्दू जो नीच उनको बता रही है ॥

—०—

ग़ज़ल

ये ज़र वाले गरीबों को दिलों से भूले जाते हैं ।
 न लेते हैं ख़बर उनकी गुमां से फूले जाते हैं ॥
 नहीं रक्खा गरीबों को ज़माने में किसी काबिल ।
 दगा करते हैं और उनके लहू को पीते जाते हैं ॥
 सताते रात दिन उनको न दम तक लेने देते हैं ।
 इसी वायश ग़ज़ल के दीन, मेहमां होते जाते हैं ॥
 तड़फते दाने दाने को, तरसते कपड़ों तक को हैं ।
 तभी तो सूख कर कांटा, किसां ये होते जाते हैं ॥
 सताया है गरीबों को, बहुत तुमने ऐ ज़र वालो ।
 तुम्हारी मौत के भी जल्द शामां होते जाते हैं ॥
 सताना छोड़ दो उन वे कशों को, पैसे वालों तुम ।
 तुम्हारे जुल्म सह सह वह परेशां होते जाते हैं ॥
 खुदा ने हमको तुमको जब बनाया एक ही सा है ।
 तो क्यों दुश्मन हमारी जान के तुम होते जाते हो ॥
 निभाते हो नहीं इनाशानियत का हक़ हमारे संग ।
 तभी तो हक़ की नज़रों में ख़तावार होते जाते हो ॥
 दिमाग़, दिल से पढ़ डालो ज़रा तारीख़ रश्क़ तुम ।
 किसानों और मजदूरों को हक़ जब दोने बाने हैं ॥

ऐ बे कश कौम हो हुश्वार तुझपर है जहाँ कायम ।
 तेरी आहों के कायल नौजवां हम होते जाते हैं ॥
 उठा खामां है 'बन्दा' का नहीं मालूम क्या होगा ।
 मिला ऐ हिन्दियों अब तुम, ये नगमें गाये जाते हैं ॥

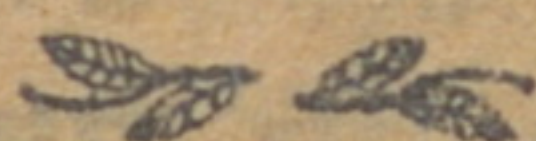
गज़ल

जालिम ने ढाया है कहर मिट्टी बहुत ही ख़वार की ।
 दर्द में दिल समा गया हिलकी बंधी बेज़ार की ॥
 रोती है मादरे वतन, हालते हिन्द देखकर ।
 तौक़ गुलामी है गले बेड़ियां हैं फौलाद की ॥
 तड़फें हैं भूख प्यास से, हिन्दी किसान रात दिन ।
 कोई ख़बर न लेता है मजदूर और किसान की ॥
 भूखे तपड़ते बच्चे हैं बीबियां हैं बिलख रहीं ।
 लेंगे ख़बर अमीर वयों उनकी तो शब है ऐश की ॥
 मुल्क के नौजवानों गर तुमको जहाँ में जीना है ।
 छोड़ तमाम धन्धों का लेलो ख़बर किसान की ॥
 करते हो फ़ैशननेबुली होकर गुलाम कौम खुद ।
 मां का बहुत मलाल है हालतें देख आपकी ॥
 तुम को अग्रचे मान है, कुल भां शिवा प्रताप का ।
 शेरों डटो आ जंग में, आन लो अब आज़ाद की ॥
 रोता है 'बन्दा' ज़ार २ प्यारे वतन के दर्द से ।
 क़लम नहीं है चलती अब तहरीर हो जो हिन्द की ॥

गजल

करो स्वदेशी से प्रेम अब तुम, जो चाहते हो स्वराज लेना ।
 निशार करदो स्वदेश पे जां, जो चाहते हो स्वराज लेना ॥
 स्वदेशी का है पुरुषगन्डा स्वदेश का है तिरंगा झन्डा ।
 स्वदेशी से ही सबाओ तन मन, जो चाहते हो स्वराज लेना ॥
 स्वदेशी से ही है तन की लज्जिया स्वदेशी से ही धरम की रक्षा ।
 स्वदेशी का ही सबक पढ़ो तुम जो चाहते हो स्वराज लेना ॥
 स्वदेशी में ही है इतनी शक्ती, विदेशी जिस से सदा हिचक्की ।
 स्वदेशी के ही बनो हितेषी जो चाहते हो स्वराज लेना ॥
 है मर्ज 'बन्दा' की हर जबां से व बूढ़े बच्चों और देवियों से ।
 कि सच्चे खादिम बनो वतन के जो चाहते हो स्वराज्य लेना ॥

काव्य नं० ६



सच बोलो तुम सदा, सच्चाई पर चलते रहो ।
 दुनिया करती हो बुराई, तुम भलाई पर रहो ॥
 लाख कोई तुम को सताये, तुम मगर सहते रहो ।
 हो भला तेरा मधुर तम, बैन तुम कहते रहो ॥

२

जो कहीं दुखिया कोई, दुःख जाल में होवे पड़ा ।
 दुःख की बिता उसे, बेचैन करती हो बड़ा ॥

दुःख के मारे विलम्बता, बिलबिलाता हो पड़ा ।
घाव अथवा दर्द हो, जो कष्ट देता हो कड़ा ॥

३

जाके पूछो हाल उसका जो दुखी हो रो रहा ।
बिकल हो निज कष्ट से, जल नेत्र से मुख धो रहा ॥
दुःख की दारिद्र्यता से, जान जी को खो रहा ।
अपने दुख कर्मों के हैं, प्रताप से वह रो रहा ॥

४

धीरता उसके हृदय को रात दिन देते रहो ।
दिल से सेवा करके उसके, कष्ट को हरते रहो ॥
जब तक दुःख उस के तन से, मित्रवर न दूर हो ।
तब तक तुम भी सदा, उसके रहो अनकूल हो ॥

५

एक के जब दुख में भाई दूसरा तैयार हो ।
तब भला किस की है ताकत तुम्हारा खूबवार हो ॥
प्रेम आपुस में करके, जब रहोगे भाइयों ।
तब तो छूटें दुःख सारे सुख पाओ भाइयो ॥

६

यही सेवा देश की है, यही रक्षा धर्म की ।
ऐसे ही होगी गुलामी, दूर भारतवर्ष की ॥
क्या कहें हम आप से जो आज, हाबत देश की ।
आप खुद ही देखते हो, है दशा जो देश की ॥

कविच

छटा थी प्रताप की ॥

वीर प्रताप के प्रताप की छटा थी चढ़ी हिन्द
 कि प्रतापी लाल भाल पे 'आज़ाद' के ।
 बल था भुजाओं में, मान था मशतक में, शक्ति थी
 हृदय में, या दिशाओं में देश के ॥
 मान अपमान का बाल ही से 'ज्ञान हुआ, योग में
 ही मशत थे वे दोनों लाल देश के ।
 बन्दा, बने हिन्द के, हिन्दी श्रेम जीवियों के, निकले
 सपुत दौड़, हिन्दी हिन्दू हिन्द के ॥ २
 मान अपमान का उनको कहो ज्ञान क्या, जिनके
 अन्नवस्त्र का सदा, ही रहे टोटा है ।
 प्रथम तो मार पड़ी उन पे दैव की ही सुने, दायम
 अमीरों ने खूब ही खशोटा है । नोचा है हाण मास
 चूसा है रक्त का, ताड़ पे न सबर भयो कर से
 गला घोटा है । बन्दा करैगो का ऐसे पूंजी बाद का
 कर में दुधारो गह कसले लगेटा है ॥ ३
 श्रेम जीवी भाइयों का कशा सदा चुंगल में, और
 नीच कह के नित्य, नीचे गिराया है । जिन के परिश्रम
 से मान हुआ विश्व में, उन्हीं के अछूत का तखल्लुश
 लगाया है ॥ कहो उन्हें नीच या अछूत कहो आज
 तुम, किन्तु गांधी जी ने हरी भक्त ही बताया है ।
 प्रेम करो विछुड़ों से 'बन्दा' की बिनय है यही,
 क्यों की समाज बाद भारत में आया है ॥ ४
 छब व मज़दूरों की देखो दशा आज, केते तो अन्न

बिना प्राणह, गवार्त है । द्रव की हीनता से, वर्षा व
 शर्द में, निमोनिया मलेरिया भी इन्ही को सताते हैं ॥
 ताहू पे पूंजी पति नेक हूँ न ध्यान देते, किसकी
 कमाई से पेश हम उड़ाते हैं । बन्दा दुःखी दोन हो
 न पराधीनता से, युबुक सम्राट नेहरु साम्य उपजाते हैं ॥

x

x

x

मोहन है खाक शार या बन्दा बरेलवी ।
 मुर्दा नहीं है हिन्द है ज़िन्दा बरेलवी ॥

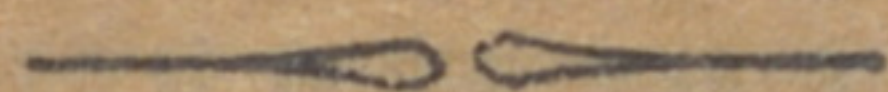
॥ साम्वाद का हौआ ॥

—):o:(—

शोशिलम का बतन में भी है गुल खिला,
 जिसकी शोहरत हर एक शहर में हो रही है ।
 होगा श्रम जीवियों का यहां राज अब,
 पूंजी यतियों की बुद्धी बिगड़ यू रही ॥
 चलती हर एक जगह बात नेहरु की है,
 ज़िन्दगी जिस की ज़िन्दा में सर हो रही ।
 उसके आगे चलेगी न 'बिन्दा' तेरो,
 इस लिये लीडरों में भी अब चल रही ॥

—:o:—

—: स्वराज पार्टी :—



पार्टी एक कायम हुई और है, जिस को है
फखर कि हम सुरादिष्ट है ।

जा लड़ेंगे उस चाईश भवन में सुना,
जिस में गलती किसी की नहीं दाल है ॥

चाल में उनकी आयेंगे हरगिज़ हम,
जिनकी चालाकी आलम में विख्यात है ।

भूल जायेंगे वह राज नीतगिता,
क्योंकि हम भी तो भारत के फैशिष्ट हैं ॥

थी हमें ऐसी आशा नहीं ख़्वाब में,
जो है देहली विलिङ्गन भवन में गये ।

कर रहे वह दलों कड़ी से कड़ी,
जो कि खादिम वतन के कहाँ कर गये ॥

है ये आशा किसानों व मज़दूरों को,
उन के नेता है प्रकाश जी भी गये ।

धन के पात्र हैं इस लिये 'बन्दा' वे
क्यों कि बन्दे वतन के कहाँ कर गये ॥



मोहन, हैं केवल भारत में, अब हैं,
स्वदेश के लाल कहां ।
बेकश 'बन्दा' है तड़फ़ रहा, कृष व मज़ूर
ख़ुश हाल कहां ॥

मिलने का पता —

मैनेजर—

देव उत्थान

संमत,

'७८'

आज़ाद पुस्तकालय

बरेली ।

नोट:—कोई सज्जन इस पुस्तक में से किसी पक्ति तथा किसी कविता के संग्रह व प्रकाशन का इरादा न करें क्योंकि प्रचार व प्रकाशन लेखक के आधीन है यदि करेंगे तो न्यायालय से दंडित होंगे ।

जे० के० शिघल के प्रबन्ध से शिघल प्रिंटिंग वर्क्स बरेली में छपा

‘आजाद’ ग्रंथ माला

की कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें

हमने देश की परस्थिति देखते हुये ऐसे साहित्य प्रकाशन का अपने ऊपर भार लिया है कि जिस से देश के किसान व मज़दूर जागें और समझें कि हम पहले क्या थे और अब क्या हैं। यदि आप साहित्य प्रेमियों ने हमारी इस पुस्तक को अपना कर हमारे साहस को बढ़ाया तो हम आशा करते हैं कि हम आपके कर कमलों तक कुछ पुस्तकें और पहुँचा सकेंगे, और निम्न लिखित पुस्तकें शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित करने का उद्योग कर रहे हैं।

नाम पुस्तक	मूल्य
शहीदे वतन	२
हरी जन गीताञ्जली	३
पूजा पतियों की पोल	३
आजाद, की लुकार	३
गरीबों की पुकार	३

मिलने का पता—

आजाद, ग्रंथमाला आफ़िस

‘हरीजनरोड’ बरेली सिटी।